# गीता भगवान वाणी

अगर किसी से संग भी नहीं है तो भी मन वाणी की जो भी विषय है वो मेरा ही है। मैं ही हूं उधर। जो भी सारा जगत रहा है वो मैं हूं। और एक ही ब्रह्म है, एक ही ब्रह्म वो मैं हूं। जो अलग अलग देखता है वो मृत्यु से मरता है। उसको मृत्यु मारेगी ज़रूर। मरेगा वो जो अलग देखेगा। मैं अलग हूं, ये अलग है, वो अलग है। सब जो अलग अलग है उसको मृत्यु मारेगी। मांगने वाला और कुछ जानता हूं और ज्ञान, जानने वाला और किसको जानता हूं। दूसरी कोई चीज़ है क्या जिसको जानता हूं? तीन हो गया ना, जगत में सब तीन है बस। तीन से ही ये तुम्हारा व्यवहार चलता है। मैं देता हूं, ये लेता है, ये चीज़ है। मैंने भाई इसको दान किया, मैंने लाख रुपया फलाने को दान किया। मैं दान देने वाला हूं वो दान लेने वाला है और लाख रुपया दिया। चीज़ भी है, देने वाला, लेने वाला। ज्ञाता – माना जानने वाला, ज्ञेय – माना जिसको जाना जाय, और ज्ञाता ज्ञेय ज्ञान, ज्ञान – माना जान।

तुम्हारे में जो जान पड़ी है अंदर, भाई ये है वो है, मैं इसको जानता हूं, मैं उसको जानता हूं। क्या जानता है? दूसरे को जानता हूं। तुम जानने वाला और दूसरी कोई चीज़ है जिसको तुम जानता है। मैं भाई भगवान को जानता हूं, मैं ब्रह्मज्ञानी हूं ना, ब्रह्म को जानता हूं। तुम कौन है और ब्रह्म कौन है। मैं भी भगवान को जानता हूं, "मैं" माना कौन? तुम अलग है भगवान अलग है? तुम अलग है भगवान ब्रह्म अलग है? तो मैं ब्रह्मज्ञानी हूं ये अहंकार है ये द्वैत है लेकिन मैं ब्रह्म हूं ये सच है। ब्रह्मज्ञानी नहीं बनना। ब्रह्मज्ञानी बनेगा तो ये अहंकार हो जायेगा द्वैत हो जायेगा कि मैं ब्रह्म को भी जानने वाला हूं। मैं भगवान को जानने वाला हूं। मैं ज्ञाता हूं, ज्ञाता किस चीज़ का है? कौन सी चीज़ है तुम्हारे से जुदा जिसको तुम जानता है और जान कहां से आई? एक ही आत्मा है।

ज्ञाता ज्ञेय ज्ञान। ध्याता ध्येय ध्यान। जो एक ही आत्मा है, ध्यान करने वाला, जिसका ध्यान करता है और ध्यान एक ही आत्मा है। तीनों में जो आत्मा देखता है वो ही सच देखता है।

> वो बोलता है वो तीनों मेरे में नहीं है, मैं आत्मा आश्रयवत हूं, जिसमें ये तीन चीज़ नही है। जगत वाला जो देह अध्यासी है वो तीन चीज़ में पड़ा है। सारा दिन बोलता है मैं भी हूं, तुम भी है, ये भी है, वो भी है, ये वस्तु भी है। सब जो जगत का आदमी है जो आदमी करके देह अध्यासी है वो तीन चीज़ देखता है और तीन चीज़ में ही व्यवहार करता है। लेना देना सब तुम्हारा व्यवहार तीन चीज़ में चलता है, मैं सेठ हूं ये नौकर है, मैं इसको तनख्वाह देता हूं। तुम कहां से आया सेठ? किधर से सेठ आया तुम? सेठ तो एक ही भगवान है, कि तुम है? नौकर कहां से आया, वो भी भगवान ही है। चीज़ कहां से आई? पैसा किधर से आया? तुम्हारा पैसा है क्या जो तुम उसे देता है, धमकाता है सारा दिन? मैं कमाता हूं, तुम खाती है, स्त्री को आके धमकाता है घर में।

अरे खर्चा संभाल के करना, किधर किया खर्चा मेरे को हिसाब दियो। क्योंकी मैं कमाता हूं तुम खरचती है, तुम खाती है, तुम इधर तो नहीं देके आई, उधर तो नहीं देके आई। मैं तुम्हारा बॉस हूं, मैं तुम्हारा भगवान हूं, पति परमात्मा हूं। मैं कमाता हूं, तुम खाती है। मैं भी हूं, तुम भी है, चीज़ भी है। हर बात में तीन करके तुम्हारा व्यवहार है और यही व्यवहार तुम्हारा नरक में डालने वाला है। और ज्ञानी तीन देखता ही नहीं है। कसाई, बकरा, तलवार। जो एक ही देखता है आत्मा उसको पाप लगेगा? लेकिन कसाई बोलता है मैं बकरा काटता हूं, मैं कसाई हूं, मैं बकरा काटने वाला हूं, ये तलवार है। सधना कसाई को पाप नहीं लगा। क्यों? वो तीन चीज़ में नहीं था। तुम देखने वाला तीन में था। भाई सधना कसाई बकरा मारता है। तुम बोलेगा ज्ञानी फलाना शहद खाता है, फलानी चीज़ खाता है, तुम पापी होएगा। जब ज्ञानी में कोई व्यवहार देखेगा तो। तुम्हारे सपने में है व्यवहार। तुम्हारे सपने में समझो ज्ञानी रात को आया। तुमने सपने में देखा कि ज्ञानी ये खा रहा है, ज्ञानी ऐसा कर रहा है, फलाना ऐसा कर रहा है लेकिन ज्ञानी को तो कुछ नही है। तुम्हारे सपने में सब व्यवहार है।

ज्ञानी तो तीन ही चीज से ऊपर है, वो तीनों को आत्मा करके देखता है तो जा के कसाई से पूछो, सधने से तुमने कभी बकरा काटा है? वो बोलेगा बकरा तुम्हारी नज़र में है, पाप भी तुम्हारी नज़र में है, पुण्य भी तुम्हारी नज़र में है। हमने तो कभी पाप भी नहीं किया पुण्य भी नहीं किया है, हमने तो बकरा मारा ही नहीं है। बकरा भी आत्मा मरता कौन है? तलवार भी आत्मा, मैं भी आत्मा। कौन मारता है, किसको मारता है, और क्या मारता है? जो तीनों को आत्मा समझता है वो कभी पाप कर ही नहीं सकता है। तुम चाहे कसाई नहीं है, समझो तुम कपड़े वाला है, कोई हीरे वाला है, कोई सोने वाला है, कोई दूसरा करता है काम वो भी पाप में ही करता है। अलग अलग करके देखता है सब आत्मा को ना ना को देखता है तो मरने वाला मर जाता है।

नाना को देखने वाला ही मरेगा। और जो एक ही ब्रह्म देखेगा वो मरेगा ही नहीं कभी। अलग अलग नहीं है एक ही ब्रह्म है। उसको नमस्कार है। अपने को गिनती किया ही नहीं दूसरे को गिनती किया। भगवान ये है, भगवान ये है, भगवान कृष्ण है, ऊपर देखता है, नीचे देखता है, ऐसा ऐसा करता है इशारा। भाई भगवान वो है। अपने सिर पर कभी हाथ नहीं रखा है कि मैं भगवान हूं। दसवां डायरी जो था न वो तुम सब बैठे है। खाली अपने को भुलाया है बाकी सबको याद किया है। अपने आप को भुला दिया है। भाई ऐसा होता है, भाई दुनिया में क्या लगा पड़ा है? कलयुग में क्या लगा पड़ा है, माया में क्या नही होता है? ऐसा होता है, ऐसा होता है सारा दिन बकवास करते माया की बात। बोलता है माया और माया का कार्य मेरे में नहीं है, कुछ होता ही नहीं है। कार्य माना कुछ कार्य होता ही नहीं है, मेरे में। मैं जो आत्मा हूं उसमें नहीं माया है, नहीं माया का कुछ कार्य है। माया ही असत है, माया ही मिथ्या है तो उसका कार्य भी मिथ्या। मैं हूं सत और सत में कोई कार्य होता ही नहीं है।

सत माना आत्मा, आत्मा में कोई कार्य नही है। तुम जब देह में आता है तो आके बकवास करता है। सारा दिन सबके अंदर में इतनी इतनी बकवास है माया की। मेरा मर्द ऐसा है, मेरा बेटा ऐसा है, मेरा फलाना ऐसा है, ऐसा करता है, ऐसा होता है, दुनिया में ऐसा होता है, मेरे से ऐसा होता है, तेरे से ऐसा होता है। मैं और तू, ये और वो, हजारों बातें दिल में है सबके। ये तुम्हारे अंदर जो खेल चलता है, ये जो संसार तुम्हारे अंदर चलता है वो तुमने ही पैदा किया है। अभी आत्मा को जानो देखो माया और माया का कार्य मेरे में नहीं है, आत्मा में नहीं है। तुमको कुछ भी नही देखने में आएगा कि मेरे में कुछ होता भी है, अंदर शांति हो जायेगी आत्मा तो बाहर भी शांति है। तुम्हारे अंदर द्वैत है तो बाहर भी देखने में आता है सब बातें।

अंदर का द्वैत निकालो, आत्मा ही आत्मा देखो, भगवान ही भगवान देखो, पीछे देखो कोई बात करता है माया की। माया है कहां? तुम है ब्रह्म स्वरूप। ब्रह्म में माया किधर से आई। ये तुम्हारा परछाई है। परछाई ही बात करता है जो मिथ्या बात है वो करता है और जो सत है भगवान उसकी बात ही नहीं करता है। सत में कभी असत आया है क्या? सत में कभी मिथ्या है भी क्या कुछ? तो तुम ब्रह्म है उसमें माया और माया का कार्य भी नहीं है। कार्य सब ये बाहर दिखाई देता है, तुम्हारे में नहीं है। ये भी आंखों का दोष है क्योंकि ब्रह्म नहीं देखता है, ना ना देखता है, इसके लिए ना ना में व्यवहार है। जो एक ही ब्रह्म देखता है वो बोलता है कि हम कुछ नहीं देखता है। दादा ने बोला कि मैं तो ऐसा समझता हूं की सारी सृष्टि strike पर है। सारी सृष्टि strike पर है, कोई कुछ करता ही नहीं है। शांत ही शांत है कोई कुछ नही करता है जिसकी मैं बात तुमको बताऊं।

फलाने ने ऐसा किया, ढिंगरे ने ऐसा किया, मेरा बेटा ना late उठता है, दुकान में नहीं जाता है, ऐसा मेरे को बोलता है, ऐसा करता है, मेरी बहु ऐसी है, मेरा मर्द ऐसा है, मेरा फलाना ऐसा, सेठ ऐसा, नौकर ऐसा, कुछ होता ही नही है, कोई कुछ करता ही नहीं है, किसकी बात सुनू। मैं तो एक ही ब्रह्म देखता हूं। सारी दुनिया strike पर है। कोई कुछ नहीं करता है। वो यही बोलता है कि माया और माया का कार्य मेरे मे नहीं है क्योंकि मैं ब्रह्म देखता हूं ब्रह्म ही हूं।

बीमारी है जिसकी दवाई कोई नही है, मैं शुद्ध चेतन हूं यही है दवा। बस ये दवा किया तो द्वैत का भ्रम नाश हो गया। सब दुख का कारण द्वैत बोला, दूसरा देखना, मैं जुदा, ये जुदा, मैं जुदा, तू जुदा। फिर झगड़ा शुरू हुआ। तुम बोलता है इसने दोष किया मैंने थोड़ी किया, बोलो उधर भी मैं ही हूं। पीछे तुम बोलेगा इसने दोष किया? दोष करने वाला भी मैं हूं। तो द्वैत में ही सब झगड़ा है, द्वैत में ही रोला है।

ये डमरू नहीं बजता है, डमरू बजता है उसमें दो खाली पत्थर है, पथरा होता है ऐसा, ऐसा बजना शुरू करता है। तुम्हारे में द्वैत है तो सारा दिन बजता है, तुम्हारा radio कभी बंद ही नहीं होता है। Radio बेचारा जड़ अच्छा है जो बंद तो हम कर सकते है। तुमको तो बंद भी नहीं कर सकते, ऐसा तुम radio है। दूसरा खाली आया अंदर तो दुख शुरू हुआ या नहीं। दूसरा भूत प्राणी तुम्हारे अंदर आ गया, मेरा सेठ, मेरा नौकर, मेरी फलाना, मेरा ढींगरा आया अंदर और दुख शुरू हुआ। वैसे तो तुम आत्मा हैं निरंजन है, दाग रहित है। आरसी तो दाग रहित है ना (शीशा)। खाली उसके सामने कोई आया द्वैत, कोई भूत प्राणी आके खड़ा हो गया तो उसमें प्रतीत हुआ। लेकिन आरसी तो अभी भी साफ है। जब तुम्हारे में द्वैत आया तो दुख हुआ, द्वैत गया तो तुम सुखी है। आत्मा पहले से ही निरंजन है, दाग रहित है। दाग है तुम्हारा द्वैत, द्वैत आया तुम काला हो गया, दूसरे की बात सोचा तुम्हारी दिल काली हो गई। द्वैत में ही सारा दुख है, आत्मा को द्वैत प्रतीत होता है तो दुख भी प्रतीत होता है। लेकिन आत्मा में द्वैत है नहीं।

आत्मा साफ है निरंजन है। तुम्हारे अंदर कुछ भी नहीं है। तुम खाली है। लेकिन द्वैत को अंदर ला के और आपे ही दुखी हुआ। दूसरे का ख्याल तुम को दुखी करता है कि अकेला बैठा है तो दुखी होता है। दूसरा माना ये शरीर है । शरीर का भी ख्याल करेगा ना तो भी द्वैत में आ गया। ये शरीर भी द्वैत है। अपनी आत्मा में बैठेगा तो खुश है। अपने ब्रह्म स्वरूप में बैठेगा कि मैं ही हूं तो खुश है तुम। लेकिन ये शरीर भी आ गया मैं बीमार, मैं दुखी, मैं सुखी, मेरे को ये पूछता नहीं है, मेरा मान हुआ, मेरा अपमान हुआ, मैं बड़ा, मैं छोटा, मेरे को कोई पूछता नहीं है, मैं ऐसा, मैं ऐसा, मैं माना शरीर। शरीर रूपी द्वैत भूत तुम्हारे अंदर आ गया, शरीर भी, ये अपना शरीर ये भी द्वैत है। अपने साथ सारा जगत भी द्वैत है। जब तुम देह से अलग होएगा, अपने को आत्मा जानेगा की तुम निरंजन है, साफ है, तुम्हारे में कोई भी द्वैत नही है, तुम्हारे में कोई दाग नहीं है।

आत्मा को भी द्वैत आ गया तो वो भी भूल गया। अपने को ऐसा समझ के बैठा कि मैं शरीर हूं। शेर बकरियों के संग में शेरपना भूल गया। बकरी की तरह बे बे करने लगा। फिर जब ही बड़ा शेर आया तो छोटे शेर को पकड़ के बोला, "अरे तू शेर है तू। बे बे क्यों करता है?" तो तुम भी बकरियों के संग में था ना, भगवान तुमको घसीट के इधर लेके आया है। भाई तुम बकरियों के संग बे बे क्यों करता है तुम तो शेर है। तुम तो शेर शिवोहम की गर्जना करो ना, आत्मा की गर्जना करो ना, तुम क्यों बे बे करता है? देह अध्यासियों के संग में तुम भी मैं मैं शुरू करता है, क्यों? उधर जाता है और मैं मैं शुरू करता है। इधर क्यों नहीं मैं मैं करता है भला। हमारे सामने मैं मैं करो। हम तुमको बोलता है तुम बात करो, देखूँ कौन सी बात करेगा। इधर तुम, भगवान मैं तो कुछ नही हूं, भगवान मेरे को तो कुछ नही है, मैं तो कुछ नही हूं। इधर बोलेगा ऐसा और घर में क्या बोलेगा तुम? इधर सब बोलेगा मैं तो कुछ नहीं, मेरा उद्धार करो, मैं तो कुछ नही हूं मैं तो कुछ नही हूं। मेरे में कोई चतुराई नही है, मैं तो अभोज हूं। कर्म न जाना, धर्म न जाना, सार न जाना तेरी। चोरी ठगी पाप सब कंदा पर इधर कहता कर्म न जाना धर्म ना जाना भगवान मोहे माफी दे।

कौन सा कौन सा कर्म तुमने किया है? तुम याद करो अपनी life में, कौन सा पाप तुम्हारे से नहीं हुआ है? बड़े में बड़ा पाप भी तुम्हारे से ही हुआ है। तो भी तुम अपने को श्राप समझता है। यही तो भूल हो गई है ना जब भी तुम्हारे से द्वैत आ गया तुम्हारे अंदर तो तुमने हजारों लाखों पाप किया दिन में करोड़ों पाप। द्वैत वाला आदमी सारा दिन पाप में ही पड़ा है। जो अपने को देह, दूसरे को देह करके जानेगा वो पाप से कैसे छूटेगा। तो तुम बैठके कभी वांद काई में अपने मन को जांचो की कितने कितने कर्म तुमने किए है। सब पछतावा करो अभी तो फिर जैसे तुम्हारे से वो कर्म नहीं होवे। कभी भी द्वैत में नही जाओ। ये दूसरा है मैं दूसरा हूं। दूसरा है ही नही, मैं ही हूं, मैं ही हूं। तो सबके नीचे हो जायेगा तुम, नम्रता करेगा सबके आगे।

इधर भी भगवान है, इधर भी भगवान है। भगवान बोलता है अर्जुन को, जो मुझको सब भूत प्राणियों में देखता है और जो सब भूत प्राणी मुझमें देखता है वो सब तरह से वर्तता हुआ भी मेरे में ही वर्तता है। जैसे मेरे से ही वर्त रहा है। कैसी भी वर्तन तुम्हारी होती है सारे दिन में किसी से भी तो तुम ऐसा समझेगा की मैं भगवान से ही वर्त रहा हूं। भाई भगवान से मैं कैसा वर्तूं, भगवान को क्रोध करेगा? भगवान को ठगेगा? भगवान को खराब समझेगा, भगवान को क्या करेगा? भाई मेरा भगत जैसे मुझसे ही वर्तता है, मुझमें ही वर्तता है। जहां–तहां भगवान देखने वाला एक भी पाप नही करेगा। और जो द्वैत देखता है वो तो है ही पाप में। द्वैत में भय भी होगा, किसी को डराएगा, किसी से डरेगा। सारा ही जो अनर्थ और दुख का कारण है वो ही द्वैत है। द्वैत माना मैं अलग, तुम अलग बस। दो हो गया तो सारा ही कर्म तुम्हारा हिसाब किताब हो गया।

जब हम है जब हम और तुम तो दफ्तर ही गुम। नही हम नही तुम तो दफ्तर ही गुम। और हम और तुम है तो बड़ा दफ्तर है अंदर में। इतना बड़ा तुम्हारे अंदर बातें है, इसने मेरे से ऐसा किया, मैंने इससे ऐसा किया याद है ना। अभी जब तुम भी मैं हूं मैं भी तुम हैं, एक ही आत्मा है तो तुम किसको तुम शिकायत करेगा, किसकी शिकायत करेगा, किसके लिए बोलेगा ये ऐसा है मैं ऐसा हूं, मैं अच्छा हूं तुम बुरा है? अभी बुरा देखने में आता है दुनिया में? जब तुम जाता है व्यवहार में इधर उधर सारा दिन बुरा देखने में आता है कोई? जो बुरा होए ना तो इधर लेकर आना हमारे पास, मैं तुम्हारे को उसमें भगवान दिखाऊंगा, कि भगवान है बुरा नही है। बुरा किसको बोलता है? बुरे में बुरा है तेरा मन कि वो बुरा है? बुरे में बुरी चीज दुनिया से ले के आओ। हम दिखाए कि कौन सा बुरा है, कौन बुरा है दुनिया में।

न्यारा है सबसे। ऐसी तरह से तुम्हारी आत्मा नित्य मुक्त है, कोई बंधन कोई मुक्ति तुम्हारे में नही है। भ्रांति आ के पड़ी, ये भरम आ के पड़ा। भरम की निवृति से, शिव काल से, भौंति काल से तुम्हारे अंदर ये जो भ्रांति भरम आ के पड़ा उसी भरम के लिए ये उपदेश है। एक भरम जाता है दूसरे भरम के बात से। एक माई बोलती है, "भाई मेरे को आके भूत लगा है।" तो हम तुमको बोलेगा कि हां भूत लगा है, चलो चलो एक भूत को निकलने वाला इधर बैठा है, देवी माता है, फलाना है, ढींगरा है वो भूत को निकलता है। तो सचमुच जिसको भूत लगा है वो उधर जाएगा और वो जाकर बोलेगा ऐसा करो, ऐसा करो, ऐसा करो, कुछ ना कुछ उसको कराएगा, फिर बोलेगा इसको बड़ा भूत है 500 रुपया दियो, फिर उसको मारेगा पीटेगा, फिर वो माई आपे ही बोलेगी अच्छा अच्छा अभी तो भूत निकल गया। जब मारपीट खाएगी ना उधर बहुत, तो समझ जायेगी कि अब भूत निकल गया नहीं तो बहुत मार खाना पड़ेगा, वो आपे ही बोलती है हमारा भूत निकल गया। वापस आके घर में बोलेगी मेरा भूत निकल गया। भूत था क्या? लेकिन भरम में जो आ गया तो उसको तो लेकर जाना पड़ा ना उस भूताई के पास। जिन्नाई के पास तुम्हारा जिन्न निकलेगा ना।

बहुत बड़ा जिन्न आकर बैठा है तुम्हारा, उसके लिए जिन्नाई भी बहुत बड़ा चाहिए जो लकुण्ड से तुमको मारे, वो लकुण्ड से मार के और तभी भूत निकलता है उसका। ऐसे मीठा मीठा बोल के भूत नहीं निकलता है। वो बड़ा लकुण्ड उठाता है हाथ में, तभी देह और आत्मा का ये अलग हो जाता है। तभी तुम्हारा भूत जाता है माया का अंदर से।

इसी प्रकार बोलता है ये बंद मोक्ष है भी नहीं तो भी भरम की वजह से तुम मान के बैठा है। इसके लिए गुरु के उपदेश का जरूर है। शास्त्रों का उपदेश गुरु का उपदेश जरूरी है भरम के लिए। वर्णन नहीं कर सकते हैं जगत का, कि ये सत है कि असत्य है। अगर असत है तो कैसे हैं।

हम समझो बोलते हैं सत है जगत, तुम बोलेगा कैसे है, खिन्न खिन्न में बदली होने वाला है। हम बोलता है असत है तुम बोलता है देखने में आता है, तो असत कैसे है? भाई उसने बोला मंद जब ये थोड़ा थोड़ा अंधेरा होता है तो फिर कभी भी भरम आ सकता है ना, भाई ये शायद सांप है। लेकिन ज्ञानी के लिए जिसने पूरा निश्च्य किया, पूरा जिसका अंधकार दूर हो गया और पूरा ज्ञान में है उसके लिए फिर कभी भी जगत सत नही है। कभी भी नहीं बोलेगा जगत है या सच है। कभी भी उसके पीछे नहीं जाएगा एक बारी पक्का निश्चय किया जिसने जैसे चना एक होता है ना कि वो भुन जाता है तो फिर वो कच्चा नहीं रहता है, उसमें स्ला नही होता है इसी प्रकार ज्ञानी को जब पक्का हो गया कि मैं ब्रह्म हूं तो उसके लिए तीनों कालों में जगत है ही नहीं। कभी भी जगत नहीं है देह सहित जगत नहीं है। ये भरम रूप है। और नहीं सत नहीं असत अंदर वचनी। माम वाणियासम वर्णन ना करे वर्णस्य। भाई वाणी से तुम वर्णन कर सकता है कि जगत क्या है, कब हुआ, कैसे हुआ, किधर से आया? तुम कहते है कि अज्ञान किधर से आया? कब से आया? हमको कब आके अज्ञान लगा? हम कब पैदा हुआ? पहले भगवान कब था? जगत कब था? कैसे हुआ? किधर से आया?

अरे है ही नहीं तो तुम कैसे सवाल पूछता है? जगत जब है ही नहीं तो अवर्णन वचनी है ना, वाणी से कभी तुम उसको वर्णन नही कर सकता है सत है या असत है। जो चीज है ही नहीं वो सत असत कैसे है। उसको कैसे तुम सत और असत बोलता है जो है ही नहीं। मिथ्या भरम है जो है ही नहीं तुम उसको कैसे बोलता है भूत भाई सत है असत है। जिसके लिए है उसके लिए सत है, बाकी सच तो है ही नहीं भरम है। इसी प्रकार ये जो जगत है बोला है वो सत नहीं है असत नहीं है, वाणी से तुम वर्णन कर नहीं सकता है इसके लिए क्योंकि है ही नहीं कुछ। एक ही ब्रह्म सत है। जगत है ही कुछ नहीं। देह से जगत में कोई भी वस्तु जो है वो है नहीं। जगत बना ही नहीं है, बना ही नहीं माना है ही नहीं। कभी हुआ ही नहीं है तो कैसे तुम सत और असत कहेगा उसको।

जो चीज है उसको बोलेगा ना कि ये सत है असत है, जो है ही नहीं उसके लिए क्या बोलेगा। भरम मात्र तुम्हारे में खाली ऐसा प्रतीत होता है बाकी है कुछ नही। एक ही भगवान था अभी तुम भगवान देखो तो भय निकल गया ना, रस्सी में सांप का भय तब है जभी अंधेरा है। जब रोशनी आ गई तो तुम सांप देखेगा? फिर भयभीत होएगा, डरेगा, मरेगा? जभी जगत देखेगा तो डरेगा। लेकिन जगत जभी है ही नहीं प्रकाश ही प्रकाश है आत्मा का, सांप नहीं है नोड़ी है, रस्सी है। फिर तुम डरेगा कैसे? तो पूरा ही पूरा जब रोशनी हो जाएगी पूरा ज्ञान हो जाएगा कभी भी सपने में जगत फिर दिखाई नहीं देगा कि जगत है। ज्ञानी ऐसा पक्का विश्वास करता है जो एक बारी देखा ये मृगतृष्णा का जल है तो फिर लोटा ले के नहीं जाएगा। एक बारी तुमने समझा कि जगत है ही नहीं तो तुम जगत की बात कैसे करेगा? जगत की कल्पना कैसे करेगा? एक बारी दादा एक सत्संग कर रहा था कि भाई जगत बनया ही नहीं है, आत्मा ही सत है।

एक माई ने सवाल पूछा कि दादा मेरा एक सवाल है। दादा बोला पूछो, दादा जगत कैसे बना? दादा बोला, अभी हमने बोला जगत है ही नहीं फिर तुम पूछती है कि जगत कैसे बना, फिर भूल गई। तो उसने कान पकड़ा हां बराबर जब जगत बना ही नहीं है तो फिर बना फिर कैसे? जगत कबसे बना? कैसे बना? जगत क्यों पैदा किया भगवान ने? काहे के लिए पैदा किया? हमको मुलझाके मारा है भगवान ने। बोला अभी जगत बना नही है, नही बना है तो तुम मूंझती क्यों है? जो कुछ बना ही नही है उसमें तुम मुंझ गया है। जो है ही सत ब्रह्म, एक ही ब्रह्म है उसका निश्चय करो तो मुंझेगा क्यो?

हां बार बार विचार करो। Time बची हो तो आत्मा का विचार करो। बहुत दुनिया का विचार किया अभी ये विचार करो ब्रह्म का।

ज्ञानी के लिए तुम नहीं बोल सकेगा कि ऐसा करना चाहिए, भाई ज्ञानी को ऐसा नहीं करना चाहिए, ये पाप है, ये पुण्य है, भाई ये रोग किया हुआ करम है ऐसी रोग को ज्ञानी के पास है ही नहीं माने किया हुआ कुछ भी नहीं है क्योंकि ज्ञानी शरीर से ऊपर है देह के संबंध से ऊपर है। इसके लिए उसके लिए पाप पुण्य, नर्क स्वर्ग, बंद मोक्ष ये कर्म करना चाहिए, ये नहीं करना चाहिए, ये विधि ये निषेध, ये शास्त्रों का ये बातें ये सब अज्ञानी के लिए है। ज्ञानी से तुम कभी भी नहीं लगाना भाई शास्त्र में तो ऐसा लिखा पड़ा है तुम ऐसा क्यों करता है? भाई ब्राह्मण को ऐसा करना चाहिए, क्षत्रिय को ऐसा, वैश्य को वैसा, शूद्र को ऐसा। गृहस्ती को ऐसा, भाई ये तुम गृहस्ती है तुमको तो ऐसा करना चाहिए। ज्ञानी गृहस्ती, सन्यासी, वानप्रसथी नहीं है। ज्ञानी तो आत्मा बस। आत्मा कहके चुप हो जाओ। ज्ञानी के पास तो कुछ नहीं कह सकते हैं। जिज्ञासु के लिए भी कुछ है भाई ऐसा करो ऐसा नहीं करो, भाई माया में नहीं जाओ, विषय विकार को छोड़ो, ये चिंतन नहीं करो, माया का चिंतन नहीं करो जिज्ञासु के लिए सब बातें हैं।

भाई यह ज़हर समान विषय को त्याग करो। ज्ञानी के लिए नहीं त्याग है नहीं गृहण है। जिज्ञासु के लिए त्याग गृहण क्यों है क्योंकि वो गंद में भरा पड़ा है तो उसको गंद छोड़ने का है। भरम में है तो भरम छोड़ने का है। उसके लिए ये सत वस्तु को प्राप्त करने के लिए यह सत उपदेश है लेकिन ज्ञानी के लिए बोलता है कुछ नहीं है। ये जो भी सब है वो अज्ञान में जो फंसा हुआ जीव है उसके लिए सब बातें हैं, ऐसा करो ऐसा नहीं करो उसके लिए सब बातें हैं। पर ज्ञानी के लिए एक भी बात नहीं है क्योंकि वो देह को और सारे संसार को जो मिथ्या समझ के बैठा है उसके लिए कोई फर्ज, धर्म, duty, कर्तव्य, अकर्तव्य कुछ नहीं है। उसने बड़े में बड़ा फर्ज पालन किया जब अपने आत्मा को जाना। बोलता है जिसने अपने ब्रह्म को जाना है आत्मा को जाना है सब देवता जो है उसके ऊपर न्योछावर होता है और सभी पितरों को उसने जैसे पानी दे दिया।

जिसने आत्मा का ज्ञान लिया आत्मा को जाना उसका तो कई जो है वो कुल तर गया। और सभी पितरों को पानी दिया। सब देवता जो है उसको प्रसन्न किया। जिसने आत्मा का ज्ञान समझा। ये बड़े में बड़ी बात है बड़े में बड़ा तथ्य उसने पूरा किया जिसने आत्मा को जाना उसके लिए कोई फर्ज धर्म duty नहीं है। भाई अज्ञानी के लिए सब है। मैं रहता भी हूं सारी दुनिया के बीच में तो भी मेरे को ना एक देखने में आता है ना दो, वन की तरह जैसे मैं ही हूं अकेला। बाकी सारा वन ही वन है। मैं आत्मा हूं मैं भगवान हूं उसके सिवाय बाकी कुछ भी देखने में नहीं आता है। चाहे इतने समूह के बीच में इतने rush के बीच में रहा पड़ा हूं, सारी दुनिया के बीच में तो भी मेरे को दुनिया देखने में नहीं आती है भगवान ही देखने में आता है इसके लिए मैं ऐसे समझता हूं मैं अकेला हूं। जैसे तुम वन में जाता है अकेला तो क्या देखता है उधर, कुछ भी नहीं। इसी प्रकार से मैं रहता भी हूं घर में, रहता भी हूं जगत में पर ऐसे देखता हूं कि जैसे कोई है ही नहीं दुनिया में, रहता ही नहीं है कोई क्योंकि दूसरे से मेरा वास्ता ही नहीं है।

दूसरा है भी बैठा भी है मेरा क्या वास्ता। तुम मुसाफिर खाने में जाता है उधर rooms में rooms में इतनी rooms है कोई कौन सी जात का कोई कौन सी जात का, कोई कौन कोई कौन रहता है, तुम्हारा वास्ता है? तुम पूछेगा उससे भाई तुम रात को देरी से क्यों आया? बाजू वाला तुम्हारा कितने बजे भी आवे, तुम पूछेगा? क्या कमाता है, क्या करता है, ये करता है, friendship रखेगा दोस्ती थोड़े टाइम के लिए फिर तुम्हारा उससे कोई भी वास्ता नहीं है। इसी प्रकार से तुम घर में रहता है चाहे जगत में रहता है तुम्हारा किसी से भी concern नहीं है, तुम ऐसे समझो जैसे मैं वन में रहा पड़ा हूं। वन में कोई भी नहीं है तुम्हारे सिवाय। इसी प्रकार तुम ब्रह्म है। ब्रह्म के सिवाय कोई भी दुनिया में नहीं है दूसरा जिससे तुम्हारा कोई वास्ता रहे। राजा जनक बोलता है, "मैं रहता भी हूं जगत में लेकिन वन की तरह खाली खाली सारा संसार खाली लगता है मेरे को।"

GB Vaani 58

भाई एक भी आदमी संसार में जैसे रहता ही नहीं है। तुम घर में रहता है तेरा किसी से भी वास्ता नहीं है जैसे मुसाफिर खाने में आदमी रहता है तुम्हारी बाजू वाले room में तुम्हारा कोई भी सोया पड़ा है, बैठा है, लड़की है, लड़का है, ये है वो है सब अपने अपने कर्म में पूरा है। सबकी प्रारब्ध अपनी-अपनी है, अपना स्वभाव, अपना कर्म, अपना सब कुछ तुम्हारा वास्ता क्या है जो तुम अपने पलंग से उठकर बाजु वाले पलंग पर बैठता है तो फलानी लड़की तुम कितने बजे आई, लड़की तुम क्या करती है, लड़का तुम क्या करता है, तेरा वास्ता ही क्या है किसी से। हर एक अपने अपने स्वभाव पर चलता है ना, सबकी अपनी अपनी प्रारब्ध है, सब अपने अपने संस्कार से आया है। तुम ऐसे समझो घर में जैसे तुम अकेला रहा पड़ा है, किसी से तेरा वास्ता नहीं है। क्योंकि द्वैत दिखाई देता है ना, राजा जनक बोलता है कि, "हमारा द्वैत ऐसा जल गया है जैसा वन, दूसरा देखने में नहीं आता है जैसे मैं वन में अकेला रहा पड़ा हूं"।

ऐसी तरह से मैं जगत में चाहे घर में भी मैं अकेला हूं बस दूसरा मेरे साथ कोई है ही नहीं। नहीं कोई हमारे साथ आया है, नहीं साथ जाएगा, नहीं साथ रहा पड़ा है। हमारे पास आके इधर देखो हम चार-पांच 8 जने रहे पड़े हैं, एक दूसरे से बोलते भी नहीं है। सुबह से रात तक कोई काम ही नहीं पड़ता है हम क्या बोले तो। कहां जाता है? कितने बजे आता है? किधर जाता है? क्या किया? क्या नहीं किया? कोई बात ही नहीं है। हर एक अपने अपने पलंग पर बैठा है अपने अपने। कोई खा रहा है, कोई पी रहा है, कोई सो रहा है, कोई पढ़ रहा है, कोई किताब पढ़ रहा है, कोई जा रहा है कोई आ रहा है मेरा की।

तुम किसी से क्या पूछता है घर में? किसी से क्या बोलता है? तुम्हारा वास्ता क्या है किसी से, क्या मतलब है उसी से तुम्हारा? अकेला रहा है ना तुम घर में, हर एक अकेला है अपने अपने कर्म में पूर है अपने-अपने काम में पूरा है।

तुम उसको बुला कर पूछेगा, बेटा इधर आओ कितनी आज कमाई हुई? आज कितने बजे तुम आया रात को? क्यों देरी से आया? किधर गया था? क्या हुआ? कैसे हुआ? तेरा की। वो आकर अगर बताए भी तो भी तुम दूसरे कान से निकाल दियो भाई मेरा क्या वास्ता है। जिसको रहना है दुनिया में, जिसको जीने की इच्छा है वो जाकर रहे दुनिया में। तुमको जीने की इच्छा है क्या?

तुम अपनी मुक्ति के लिए बैठा है ना, तेरा वास्ता किसी के साथ है। राजा जनक बोलता है, "मैं ऐसे रहा पड़ा हूं समूह के बीच में इतने बड़े दुनिया के बीच में रहा पड़ा हूं लेकिन मेरा द्वैत जैसे वन की तरह है।" द्वैत देखने में भी आता है भाई ये है लेकिन वन है जैसे है ही नहीं। है भी पर है ही नहीं। हमारे दादा के लिए सब घर वाले बोलते थे बहू, बेटे सब, भाई हमारा दादा जैसा है तैसा नहीं है, उसके ऊपर नाम ही रखा गया भाई ये है ही नहीं, देखने में आता है।

हमारा दादा है देखने में आता है खाली, शरीर देखने में आता है। ये नील शरीर देखने में आ रहा था लेकिन उसका निया जो था वो भगवान के पास था, दिल जो वो भगवान के पास था। वो जैसे घर में था तैसे नहीं था। तो उसके ऊपर ऐसा नाम क्यों पड़ा, क्योंकि वो किसी से भी concern में नहीं था, किसी के भी वास्ते में नहीं था। तुम आता है कि जाता है? कमाता है कि नहीं कमाता है? सोता है कि नहीं सोता है? किधर जाता है? क्या करता है? कितने बजे गया? कितने बजे आया? किधर गया? उनको पता नहीं है कि आज मेरा बेटा रात को नही आया है घर में। आया है या नहीं आया मेरा वास्ता ही नहीं। वो सोया भी पड़ा है लेकिन वो पूछता नहीं है कि फलाना क्यों नहीं आया।

अगर कोई बोले भी फलाना रात को नहीं आया है तो दूसरे कान से निकाल कर सो जाता है, मेरा क्या वास्ता है? मैं किधर जाकर ढूंढूंगा क्या उसको? सारी दुनिया में कई आदमी घर में नहीं आया है मैं उसको ढूँढता हूं क्या? मेरा किसी से वास्ता नहीं है। Unconcerned, Unattached, निर्मोह, राजा जनक का महलात जल गया तो भी नहीं उठा।